

वैश्विक AI संकट एवं शिक्षा जगत: शिक्षक शिक्षा और मानव क्षमता पर इसके खतरों का एक आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. चंद्र प्रकाश सिंह

सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर

Email: chandraprakashbhu@gmail.com

Received: 07 May 2026 | Accepted: 19 May 2026 | Published: 30 May 2026

Abstract (सारांश)

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और जनरेटिव AI (Generative AI) के अभूतपूर्व प्रसार ने संपूर्ण वैश्विक सामाजिक-आर्थिक और शैक्षणिक परिदृश्य को नया आकार दिया है (Russell & Norvig, 2020)। शिक्षा जगत में AI की पैठ ने जहाँ एक ओर व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning) और प्रशासनिक सुगमता के द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर इसने एक गंभीर बौद्धिक, नैतिक और संस्थागत संकट को जन्म दिया है (Selwyn, 2019)। यह शोध पत्र शिक्षक शिक्षा (Teacher Education) और मानव क्षमता (Human Potential) पर एआई संकट के बहुआयामी प्रभावों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि स्वचालित शिक्षण प्रणालियों पर अति-निर्भरता से अध्यापन कला (Pedagogy) का तीव्र गति से यांत्रिकीकरण हो रहा है, जिससे शिक्षक की संवेदनात्मक एवं नैतिक भूमिका संकुचित हो रही है (Biesta, 2015)। इसके अतिरिक्त, एआई-जनरेटेड प्रणालियों पर शिक्षार्थियों की अत्यधिक निर्भरता उनके संज्ञानात्मक विकास, मौलिक चिंतन (Original Thinking), और समस्या-समाधान कौशल को गंभीर रूप से क्षीण कर रही है (Cotton et al., 2023)। प्रस्तुत अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि एआई संकट से निपटने के लिए मानव-केंद्रित शैक्षणिक नीतियाँ, डिजिटल एथिक्स और अनुभवात्मक मूल्यांकन पद्धतियों को अपनाना अनिवार्य है।

मुख्य शब्द (Keywords): आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वैश्विक एआई संकट, शिक्षक शिक्षा, मानव क्षमता, संज्ञानात्मक विकास, डिजिटल विभाजन, मानव-केंद्रित शिक्षाशास्त्र।

1. प्रस्तावना (Introduction)

मानव इतिहास में तकनीकी क्रांतियों ने सदैव उत्पादन पद्धतियों और ज्ञान के वितरण को प्रभावित किया है। किंतु, इक्कीसवीं सदी की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) क्रांति अपनी प्रकृति, गति और व्यापकता में पूर्ववर्ती सभी औद्योगिक क्रांतियों से भिन्न है (Russell & Norvig, 2020)। जहाँ मशीनरी ने ऐतिहासिक रूप से मानव के शारीरिक श्रम को विस्थापित किया था, वहीं एआई तकनीकें मानव मस्तिष्क के विशेष अधिकारों जैसे तर्क, विश्लेषण, भाषा निर्माण, और निर्णय क्षमता का स्वचालन कर रही हैं (Boden, 2004)।

शिक्षा जगत इस तकनीकी रूपान्तरण का केंद्र बिंदु बन चुका है। प्राथमिक विद्यालयों से लेकर उच्च शिक्षा और शोध संस्थानों तक, एआई प्रणालियों जैसे लार्ज लैंग्वेज मॉडल (LLMs), एडैप्टिव लर्निंग प्लेटफॉर्म और ऑटोमेटेड ग्रेडिंग सिस्टम का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ा है (Knox, 2020)। प्रारंभिक दौर में एआई को शिक्षा का लोकतांत्रिकरण करने वाले और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने वाले क्रांतिकारी माध्यम के रूप में प्रचारित किया गया (Sharma, 2023)। हालाँकि, जैसे-जैसे इसका प्रयोग अनियंत्रित और गहन हुआ है, इसके नकारात्मक, अप्रत्याशित और विनाशकारी आयाम सामने आने लगे हैं।

इस स्थिति ने वैश्विक स्तर पर 'एआई संकट' (AI Crisis) को जन्म दिया है। यह संकट केवल तकनीकी विफलताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव चेतना, ज्ञानमीमांसा (Epistemology), और शैक्षणिक नैतिकता का संकट है (Biesta, 2015)। विशेष रूप से, 'शिक्षक शिक्षा'

(Teacher Education) जो भावी पीढ़ियों के बौद्धिक और नैतिक चरित्र का निर्माण करती है तथा 'मानव क्षमता' (Human Potential) जो मानव समाज के सतत विकास की नींव है इस संकट की सबसे पहली शिकार बन रही हैं (UNESCO, 2021)। यदि इस तकनीक के अनियंत्रित उपयोग को बिना नीतिगत और नैतिक दिशा-निर्देशों के जारी रहने दिया गया, तो यह शिक्षा को एक विशुद्ध यांत्रिक प्रक्रिया में बदल देगा। परिणामतः, शिक्षक की भूमिका केवल एल्गोरिदम के निरीक्षक तक सीमित हो जाएगी और शिक्षार्थी स्व-चिंतन की क्षमता खो बैठेंगे (Selwyn, 2019)। अतः इस बिंदु पर एआई संकट के शैक्षणिक आयामों का आलोचनात्मक एवं विषद विश्लेषण अत्यंत प्रासंगिक और अनिवार्य हो जाता है।

2. शिक्षक-शिक्षा पर मंडराता संकट

शिक्षक शिक्षा प्रणाली किसी भी समाज की बौद्धिक और नैतिक रीढ़ होती है। यह केवल विषय-वस्तु हस्तांतरण की व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ मूल्यों, समालोचनात्मक बोध, और अंतर्व्यैक्तिक कौशल का निर्माण होता है (Palmer, 2017)। एआई के अनियंत्रित आक्रमण ने शिक्षक शिक्षा के ढाँचे के समक्ष निम्नलिखित मूलभूत संकट उत्पन्न कर दिए हैं:

2.1 शिक्षक की भूमिका का गौण होना और विस्थापन का भय

स्वचालित शिक्षण प्रणालियों (Automated Tutoring Systems) और एआई-आधारित व्यक्तिगत शिक्षण सहायकों ने यह भ्रम पैदा कर दिया है कि ज्ञान वितरण के लिए अब मानव शिक्षक की आवश्यकता न्यूनतम है (Knox, 2020)। जब मशीनें डेटा का विश्लेषण करके छात्र की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ प्रस्तुत कर सकती हैं, तो नीति-निर्माताओं के एक वर्ग में शिक्षकों के स्थान पर मशीनों को स्थापित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह सोच शिक्षक के अस्तित्व और उसकी पेशेवर पहचान (Professional Identity) के लिए एक सीधा खतरा है (Selwyn, 2019)।

2.2 अध्यापन कला (Pedagogy) का यांत्रिकीकरण

शिक्षण केवल तथ्यों का वाचन नहीं है; यह कक्षा की अनकही भावनाओं, विद्यार्थियों की शारीरिक भाषा, और उनकी व्यक्तिगत पृष्ठभूमि को समझने की कला है (Biesta, 2015)। एआई एल्गोरिदम शिक्षण को डेटा-संचालित (Data-Driven) मापदंडों में समेट देते हैं। यह प्रक्रिया शिक्षण की संवेदनात्मक, नैतिक और मानवीय आत्मा को नष्ट कर देती है। जब पाठ्यचर्या का निर्धारण और शिक्षण का तरीका एल्गोरिदम तय करने लगते हैं, तो कक्षा में होने वाली सहज और स्वाभाविक चर्चाएँ (Spontaneous Dialogue) समाप्त हो जाती हैं।

2.3 भावी शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता में हास

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों (जैसे B.Ed., M.Ed.) में प्रशिक्षुओं द्वारा असाइनमेंट, पाठ योजनाएँ (Lesson Plans), और शोध प्रस्ताव तैयार करने के लिए जेनेरेटिव एआई का धड़ल्ले से उपयोग किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप, भावी शिक्षकों में स्वयं पाठ्यचर्या डिज़ाइन करने, आलोचनात्मक सामग्री का चयन करने और कक्षा में उत्पन्न होने वाली जटिल समस्याओं का तात्कालिक समाधान खोजने की क्षमता घट रही है (OECD, 2021)। शिक्षकों का अपना बौद्धिक परिश्रम कम होने से उनकी शिक्षण क्षमता और प्रभावकारिता में भारी गिरावट आ रही है।

2.4 शिक्षक-छात्र संबंध का विखंडन

शिक्षा का मूल आधार शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच का मानवीय और संवेगात्मक संबंध (Human-Emotional Bond) है (Palmer, 2017)। एआई मध्यस्थता (AI Mediation) के बढ़ने से यह संबंध औपचारिक और मशीनी होता जा रहा है। विद्यार्थी अपनी समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षक के पास जाने के बजाय एआई चैटबॉट्स का रुख कर रहे हैं, जिससे शिक्षण में सहानुभूति, प्रेरणा और नैतिक मार्गदर्शन का तत्व समाप्त हो रहा है।

3. मानव क्षमता और संज्ञानात्मक विकास पर खतरे

मानव क्षमता का तात्पर्य केवल सूचनाओं के संग्रहण से नहीं है, बल्कि यह मानसिक, संवेगात्मक, सृजनात्मक और नैतिक क्षमताओं का समग्र विकास है (Vygotsky, 1978)। एआई का अति-उपयोग मानव मस्तिष्क के इन आंतरिक स्तंभों पर सीधा प्रहार कर रहा है:

3.1 संज्ञानात्मक आलस्य और विश्लेषणात्मक चिंतन का हास

रूसी मनोवैज्ञानिक वाइगोत्स्की (Vygotsky, 1978) के अनुसार, मानव संज्ञानात्मक विकास विचारों के मंथन, सामाजिक अंतःक्रिया और जटिल समस्याओं से जूझने की प्रक्रिया से होता है। परंतु वर्तमान में, विद्यार्थी निबंध लिखने, गणितीय समस्याओं को हल करने और वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझने के लिए जेनेरेटिव एआई (जैसे ChatGPT) पर निर्भर हो रहे हैं। इस प्रक्रिया को 'संज्ञानात्मक ऑफलोडिंग' (Cognitive

Offloading) कहा जाता है (Cotton et al., 2023)। जब मस्तिष्क कठिन विचार-प्रक्रिया से गुजरना बंद कर देता है, तो उसकी उच्च स्तरीय चिंतन क्षमताएँ (Higher-Order Thinking Skills) जैसे विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन क्षीण होने लगती हैं।

3.2 सृजनात्मकता और मौलिकता का हास

सृजनात्मकता मानव मस्तिष्क का एक अनूठा गुण है जो व्यक्तिगत अनुभवों, संवेगों और कल्पनाशीलता से उत्पन्न होता है (Boden, 2004)। एआई प्रणालियाँ पूर्व-विद्यमान डेटा के पुनर्चक्रण और पैटर्न पहचान (Pattern Recognition) के आधार पर सामग्री उत्पन्न करती हैं। जब शिक्षार्थी कला, लेखन या विचारों के लिए एआई पर निर्भर होते हैं, तो वे वास्तव में एक औसत (Average) और पुनरावृत्त विचारों का अनुकरण कर रहे होते हैं। इससे समाज में मौलिक विचारों का अकाल पड़ने की आशंका उत्पन्न हो गई है।

3.3 संवेगात्मक परिपक्वता और सामाजिकता पर प्रभाव

मानवीय विकास केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि संवेगात्मक भी होता है। एआई-आधारित स्क्रीन-केंद्रित शिक्षा बच्चों और युवाओं को वास्तविक सामाजिक संपर्कों से दूर कर रही है। सहपाठियों के साथ संवाद, असहमति, सहयोग और सहानुभूति की भावना—जो वास्तविक कक्षाओं में विकसित होती है—एआई के व्यक्तिगत आभासी वातावरण में लुप्त हो रही है। इससे युवाओं में सामाजिक पृथक्करण, एकाकीपन और संवेगात्मक असंतुलन बढ़ रहा है।

3.4 डिजिटल विभाजन और अवसरों की असमानता

एआई क्रांति ने एक नए प्रकार के 'डिजिटल और बौद्धिक विभाजन' (Digital & Intellectual Divide) को जन्म दिया है (UNESCO, 2021)। उन्नत एआई टूल, हाई-स्पीड इंटरनेट और प्रीमियम सब्सक्रिप्शन केवल संसाधन-संपन्न वर्गों और विकसित देशों के पास उपलब्ध हैं। इसके विपरीत, विकासशील और अल्पविकसित देशों के शिक्षार्थी तथा ग्रामीण व वंचित वर्ग इन संसाधनों से वंचित हैं। परिणामस्वरूप, शिक्षा में अवसरों की असमानता घटने के बजाय और अधिक गहरी हो रही है।

4. शैक्षणिक नैतिकता और ज्ञानमीमांसीय संकट

एआई का बढ़ता प्रभाव शिक्षा की ज्ञानमीमांसीय (Epistemological) नींव को हिला रहा है, जिससे ज्ञान, सत्य और प्रामाणिकता की अवधारणा पर ही प्रश्न उठने लगे हैं:

- भ्रम (Hallucination) और गलत सूचना का प्रसार: एआई मॉडल अक्सर अत्यधिक आत्मविश्वास के साथ गलत, काल्पनिक या भ्रामक तथ्य प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें 'एआई हैलुसिनेशन' (AI Hallucination) कहा जाता है (Russell & Norvig, 2020)। बिना गहन विश्लेषण के इन्हें सत्य मान लेना शिक्षार्थियों में भ्रामक ज्ञान का आधार बना रहा है।
- पूर्वाग्रह और भेदभाव का पुनरुत्पादन: एआई प्रणालियों को जिस डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है, उसमें नस्लीय, लैंगिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पूर्वाग्रह मौजूद होते हैं। जब ये प्रणालियाँ शिक्षण सामग्री या मूल्यांकन का काम करती हैं, तो ये इन पूर्वाग्रहों को अनजाने में और अधिक मजबूत करती हैं (OECD, 2021)।
- अकादमिक सत्यनिष्ठा का हास: एआई टूल के आगमन से असाइनमेंट, शोध पत्रों और परीक्षाओं में चोरी (Plagiarism) का एक नया और अदृश्य रूप सामने आया है। इसने शैक्षणिक मूल्यांकन प्रणाली की प्रामाणिकता को ध्वस्त कर दिया है (Cotton et al., 2023)।

5. तुलनात्मक विश्लेषण: पारंपरिक शिक्षा बनाम एआई-संचालित शिक्षा

मूल्यांकन मापदंड (Parameter)	पारंपरिक शिक्षण प्रणाली (Human-Centric)	अनियंत्रित एआई-संचालित प्रणाली (AI-Driven)
शिक्षक की भूमिका	मार्गदर्शक, नैतिक प्रेरक और संवेगात्मक आधार (Palmer, 2017)	डेटा प्रपेटर और एल्गोरिदम का निरीक्षक (Selwyn, 2019)
अधिगम प्रक्रिया	सामाजिक अंतःक्रिया, संवाद और अनुभवात्मक (Vygotsky, 1978)	व्यक्तिगत, एल्गोरिदम-संचालित एवं स्क्रीन-आधारित
चिंतन की प्रकृति	आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं मौलिक	स्वचालित, पैटर्न-आधारित एवं संज्ञानात्मक आलस्य
मूल्यांकन पद्धति	प्रक्रिया-आधारित, सतत एवं सर्वांगीण	परिणाम-आधारित एवं स्वचालित डेटा विश्लेषण
संवेगात्मक विकास	सहानुभूति, सहयोग और सामाजिकता पर बल	अलगाव, एकाकीपन और यांत्रिक सोच

6. संकट के समाधान एवं भावी नीतिगत दिशा-निर्देश

एआई से उत्पन्न इस वैश्विक संकट का अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम तकनीक का पूरी तरह से त्याग कर दें। इसके विपरीत, आवश्यकता इस बात की है कि तकनीक का नियमन किया जाए और शिक्षा में इसके उपयोग को मानवीय मूल्यों के अधीन लाया जाए (UNESCO, 2021)। इस दिशा में निम्नलिखित नीतिगत कदम उठाए जाने चाहिए:

6.1 मानव-केंद्रित एआई नीति का निर्माण

सभी शैक्षणिक संस्थानों और सरकारों को एक स्पष्ट 'मानव-प्रथम' (Human-First) एआई नीति तैयार करनी चाहिए (UNESCO, 2021)। इस नीति में स्पष्ट रूप से रेखांकित किया जाना चाहिए कि एआई केवल एक सहायक उपकरण (Assistance Tool) के रूप में कार्य करेगा, न कि शिक्षक के विकल्प के रूप में। शिक्षक निर्णय लेने की प्रक्रिया के केंद्र में ही रहेंगे।

6.2 शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम का पुनर्गठन

शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों (B.Ed./M.Ed.) में निम्नलिखित बदलाव यथाशीघ्र किए जाने चाहिए:

- **एआई साक्षरता और डिजिटल एथिक्स:** शिक्षकों को केवल एआई चलाना ही न सिखाया जाए, बल्कि उन्हें इसके पूर्वाग्रहों, सीमाओं और नैतिक खतरों के प्रति संवेदनशील बनाया जाए (OECD, 2021)।
- **पेडागॉजिकल री-स्किलिंग:** शिक्षकों को ऐसी शिक्षण विधियों (जैसे- सक्रिटिक मेथड, रोल-प्ले, फील्ड वर्क) में पारंगत किया जाए जिन्हें मशीनें प्रतिस्थापित न कर सकें।

6.3 मूल्यांकन पद्धतियों में क्रांतिकारी बदलाव

पारंपरिक सूचना-आधारित असाइनमेंट और बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) एआई के युग में निरर्थक हो चुके हैं (Cotton et al., 2023)। मूल्यांकन को निम्नलिखित रूपों में पुनर्गठित किया जाना चाहिए-

- **अनुभवात्मक मूल्यांकन (Experiential Assessment):** मौखिक परीक्षा (Viva-Voce), इन-क्लास प्रेजेंटेशन, पोर्टफोलियो निर्माण और प्रत्यक्ष प्रोजेक्ट वर्क पर विशेष बल दिया जाना चाहिये।
- **प्रक्रिया-उन्मुख मूल्यांकन (Process-Oriented Evaluation):** केवल अंतिम उत्तर के बजाय छात्र के सोचने की प्रक्रिया, शोध के चरणों और विचारों के विकास का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

6.4 मौलिक चिंतन और सृजनात्मकता का संरक्षण

एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि पाठ्यचर्या में दर्शनशास्त्र, साहित्य, कला, और नैतिक शिक्षा को अधिक स्थान दिया जाए। ये विषय मानव मस्तिष्क में मौलिकता, मूल्य बोध और आलोचनात्मक चिंतन को जीवंत रखते हैं, जिन्हें कोई भी एल्गोरिदम प्रतिस्थापित नहीं कर सकता (Boden, 2004)।

निष्कर्ष (Conclusion)

इक्कीसवीं सदी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का विकास मानव सभ्यता के मोड़ का एक ऐसा बिंदु है जो मानव मस्तिष्क और मूल्यों को सीधी चुनौती है जहाँ तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्यों के बीच का संघर्ष अपने चरमोत्कर्ष की तरफ बढ़ रहा है। यह अध्ययन स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है कि अनियंत्रित एआई का प्रयोग शिक्षक शिक्षा की रीढ़ को कमजोर कर रहा है और मानव क्षमता के बहुआयामी विकास विशेष रूप से संज्ञानात्मक क्षमता, सृजनात्मकता और संवेगात्मक बुद्धिमत्ता पर गंभीर खतरा उत्पन्न कर रहा है (Biesta, 2015; Selwyn, 2019)।

कोई भी तकनीक स्वयं में न तो पूर्णतः वरदान है और न ही अभिशाप; इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे किस उद्देश्य और किस सीमा तक अपनी व्यवस्था में स्वीकार करते हैं (Russell & Norvig, 2020)। यदि हम एआई को शिक्षा का चालक बनने देंगे, तो हम एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करेंगे जो तकनीकी रूप से कुशल किंतु बौद्धिक रूप से निष्क्रिय और संवेगात्मक रूप से एकाकी होगी।

अतः, समय की माँग है कि हम शिक्षा की मूल आत्मा को पहचानें। शिक्षा केवल आंकड़ों का प्रसंस्करण नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर की संभावनाओं का उद्घाटन और उसकी चेतना का परिष्कार है। एआई को मानव मस्तिष्क का विकल्प बनाने के बजाय उसे केवल एक साधन के रूप में सीमित रखकर ही हम शिक्षक-शिक्षा की गरिमा और मानव क्षमता के असीम क्षितिजों की रक्षा कर सकते हैं।

संदर्भ सूची (References)

- [1]. Biesta, G. (2015). Freeing teaching from the passion for learning: How the disappearance of teaching jeopardizes education. *Studies in Philosophy and Education*, 34(3), 229–243. <https://doi.org/10.1007/s11217-014-9425-9>
- [2]. Boden, M. A. (2004). *The creative mind: Myths and mechanisms* (2nd ed.). Routledge.
- [3]. Cotton, D. R., Cotton, P. A., & Shipway, J. R. (2023). Chatting and cheating: Ensuring academic integrity in the era of ChatGPT. *Innovations in Education and Teaching International*, 60(2), 228–239. <https://doi.org/10.1080/14703297.2023.2190148>
- [4]. Knox, J. (2020). Artificial intelligence and education in China: Policy, deployment, and practices. *Educational Philosophy and Theory*, 52(14), 1592–1603. <https://doi.org/10.1080/00131857.2019.1708321>
- [5]. OECD. (2021). *OECD Digital Education Outlook 2021: Pushing the frontiers with AI, blockchain, and robots*. OECD Publishing. <https://doi.org/10.1787/589b283f-en>
- [6]. Palmer, P. J. (2017). *The courage to teach: Exploring the inner landscape of a teacher's life* (20th anniversary ed.). Jossey-Bass.
- [7]. Russell, S., & Norvig, P. (2020). *Artificial intelligence: A modern approach* (4th ed.). Pearson.
- [8]. Selwyn, N. (2019). *Should robots replace teachers? AI and the future of education*. Polity Press.
- [9]. Sharma, R. (2023). *Ethics and technology in modern education*. Academic Press.
- [10]. UNESCO. (2021). *AI and education: Guidance for policy-makers*. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. <https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000376709>
- [11]. Vygotsky, L. S. (1978). *Mind in society: The development of higher psychological processes*. Harvard University Press.

Cite this Article:

डॉ. चंद्र प्रकाश सिंह(2026). वैश्विक AI संकट एवं शिक्षा जगत: शिक्षक शिक्षा और मानव क्षमता पर इसके खतरों का एक आलोचनात्मक अध्ययन. *International Journal of Emerging Research in Arts, Science and Technology*, 1(2), 27–31.

Journal URL: <https://ijerast.com/>

DOI: <https://doi.org/10.67715/ijerast.v1i2.10>

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.